ओ३म्

गुरुकुल-शोध-भारती

षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(A Half-yearly Research Journal)

सम्पादक

प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

श्रद्धानन्द वैदिक शोध-संस्थान

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-२४९४०४

2004

यज्ञ एवं पर्यावरण संरक्षण

राकेश भुटियानी एवं डॉ. देवराज खन्ना

विकास के इस दौर में, मनुष्य के द्वारा वृक्षों का अन्धाधुंध दोहन, बढ़ता औद्योगिकीकरण एवं प्रकृति के साथ अनियमित छेड़छाड़ ने मानव जगत् को अनेक प्रकार की बीमारियों व पर्यावरण असन्तुलन की समस्या के कटघरे में ला खड़ा किया है, जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण पृथ्वी (जल, थल एवं वायु) अपशिष्ट पदार्थों से परिपूर्ण हो गयी है। आज पर्यावरण प्रदूषण से समस्त विश्व आक्रान्त है, पर्यावरण की समस्या आज सम्पूर्ण विश्व की जटिलतम समस्याओं में से एक है। आज विश्व के महान् वैज्ञानिक इस पर्यावरण प्रदूषण के निवारण हेतु निरन्तर अनुसन्धानरत हैं, परन्तु बढ़ती जनसंख्या, पर्यावरण के नियमित चक्र (इकोतन्त्र) के साथ छेड़छाड़, वृक्षों का दोहन, बढ़ता औद्योगिकीकरण आदि पर्यावरणीय आपदाओं को निरन्तर जन्म देता जा रहा है। संसार की लगभग दस प्रतिशत नदियाँ पूरी तरह प्रदूषित हो गयी हैं। आज हम उस मुकाम पर खड़े है जहाँ से वापस लौटना काफी कठिन हो गया है। यह पर्यावरण असन्तुलन हमें धीरे-धीरे विनाश की ओर ले जा रहा है, अतः वह समय आ गया है जब हमें अपने अस्तित्व के लिए पर्यावरण की सुरक्षा करना आवश्यक हो गया है।

प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार सुरक्षित पर्यावरण ही हमारे अस्तित्त्व की रक्षा कर सकता है। परितः आवरण अर्थात् पर्यावरण ही जीवनचक्र को नियमित एवं नियन्त्रित करता है, परन्तु उसके साथ छेड़छाड़ या उसमें हानिकारक पदार्थों का लाना पर्यावरण के लिए हानिकारक है जिस कारण समस्त जीव संकट में आते जा रहे हैं, कुछ जीव तो पृथ्वी से पूर्णतः विलुप्त हो गये हैं, तथा कुछ विलुप्त होने की कगार पर खड़े हैं। संसार के आदि ग्रन्थ वेदों में पर्यावरण के महत्त्व को ध्यान में रखकर इसे शुद्ध एवं संरक्षित करने की बात कही गई है। हमारे ऋषि-मुनि पुराने जमाने से पर्यावरण परिष्करण के लिए सुगन्धित व विभिन्न गुणों से युक्त पदार्थों को अग्नि में होम करते आये है। यहीं से 'यज्ञ' नामक शब्द भी उद्गत हुआ, इसलिए 'यजुर्वेद' में कहा गया है:-

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥[1]

अर्थात् श्रेष्ठ धर्मपरायण देवताओं ने प्रथम बार यज्ञ से यज्ञरूपी विराट् सत्ता का यजन किया। इससे यज्ञीय जीवन जीने वाले महात्मा पूर्वकाल के साध्य देवताओं के निवास, स्वर्ग लोक को प्राप्त करते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण को नियमित नियन्त्रित करने के लिये वेदों ने 'यज्ञ' का ज्ञान हमें दिया है, जिसके अनुसार यज्ञ से प्राणवायु की उत्तम शुद्धि अर्थात् पर्यावरण की शुद्धि होती है। अग्नि की उपासना केवल भारत में ही प्रचलित नहीं है, भारत के अतिरिक्त विश्व के कई देशों में 'यज्ञ'

---

1. यजु0 31.16

पर्यावरण संरक्षण का सरलतम उपाय बन गया है। सोवियत रूस के वैज्ञानिक शिरोविच ने गवय (दूध, मक्खन, घी, गोमूत्र, गोबर इत्यादि) के संपरीक्षण से निष्कर्ष निकलता है कि गाय के दूध में आण्विक प्रभाव से रक्षा करने की अद्भुत शक्ति है। गाय के घी को अग्नि में डालने पर उससे उत्सर्जित धुआँ आण्विक विकिरण के प्रभाव को काफी हद तक कम कर देता है। इसके अतिरिक्त आज भी जापान के मन्दिरों में अगरबत्ती तथा जर्मनी में लेवेन्डर की बत्ती जलाई जाती है। पारसी लोग भी हिन्दुओं की तरह से ही शुद्ध पवित्र होकर यज्ञ करते हैं।

आधुनिक युग में पुनः स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यज्ञ का वैज्ञानिक लाभ बताते हुए यज्ञ को स्वास्थ्य वर्धक, रोगनाशक व वायुशोधक (प्रदूषण नियन्त्रक) के रूप में निरूपित किया है।

यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले पदार्थों में मुख्यतया लकड़ी (**समिधा**)-आम, चन्दन, देवदार, बेल, पलाश इत्यादि। **वसा युक्त पदार्थ**-दूध, घी, सूखे नारियल आदि। **सुगन्धित पदार्थ**-चन्दन, कर्पूर, जायफल, इलायची आदि सम्मिलित होते हैं। इन पदार्थों का धुआँ पर्यावरण में फैले जीवाणुओं का विनाश करता है। लकड़ी के जलने पर 'फार्मेल्डीहाइड' गैस लिकलती है, जो हानिकारक जीवाणुओं (बैक्टीरिया) को समाप्त करती है। डॉ0 टीलिट के प्रयोगों के अनुसार किशमिश, मुनक्का, मखाने आदि सूखे मेवों से हवन करने पर इससे उत्सर्जित धुआँ टाइफाइड के विषाणुओं की मात्रा आधे घंटे में तथा अन्य रोगों के विषाणुओं को दो घंटे में समाप्त कर देता है। यही कारण है कि ब्रिटिश शासन काल में मद्रास के सेनेटरी कमिश्नर डॉ0 कर्नल किंग ने वहाँ प्लेग फैलने पर विद्यार्थियों को घी, केसर तथा चावल को मिलाकर 'यज्ञ' करने का परामर्श दिया था।

यज्ञ में प्रयोग की जाने वाली लकड़ी व अन्य सामग्री के प्रज्वलन से दहनक्रिया मन्द हो जाती है। इसके अतिरिक्त इस क्रिया में ऑक्सीजन की कम मात्रा का प्रयोग होता है, फलस्वरूप उत्सर्जित कार्बन-डाईऑक्साइड की मात्रा भी कम होती है जो आसपड़ोस के पेड़ पौधों द्वारा अवशोषित कर ली जाती है। अतः यज्ञ कार्बन-डाईऑक्साइड के चक्र को नियमित रखने में एक अहम् भूमिका निभाता है। यजुर्वेद में बताया गया है-

स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्।[2]

अर्थात् स्वाहा शब्द के साथ आहुति की क्रिया होती है तो आकाश में वायु ऊर्ध्वगति से ऊपर उठती है अर्थात् यज्ञवायु की ऊर्ध्वगति प्रदूषकों को दूर कर देती है।

चिकित्सा शास्त्री एम0 मॉनियर ने अपनी पुस्तक 'एंसिएंट हिस्ट्री ऑन मेडिसन' में मुद्रित किया है कि रोगों के कीटाणुओं को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल एवं सुलभ कोई पद्धति नहीं है। आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'चरक संहिता' में लिखा हैं कि क्षयरोग (टी0बी0) के कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए यज्ञ एक सरल पद्धति है। अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ0 हावर्ड स्टिंगुल ने अपने प्रयोगों के आधार पर पाया कि गायत्री मन्त्र 'ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्' के सस्वर उच्चारण से 1 सेकेन्ड में 110,000 तरंगे उत्पन्न होती हैं, जो दुर्भावनाओं

---

2. यजु0 6, 16

को काफी हद तक शान्त कर देती हैं। डॉ0 खन्ना (2003) ने अपनी पुस्तक 'यज्ञ एवं वायु प्रदूषण' में प्रयोगों से सिद्ध किया है कि यज्ञ से वायु प्रदूषण किस प्रकार दूर किया जा सकता है।

अतः हम स्पष्ट रूप से यह कह सकते हैं कि यज्ञ हमारे पर्यावरण संरक्षण के लिए एक सरल एवं उच्चतम पद्धति है। यज्ञ हमारे पर्यावरण के अतिरिक्त हमारे मन को भी शान्ति प्रदान करता है। पर्यावरण प्रदूषण को नियमित नियन्त्रित करने के लिए वेदों ने 'यज्ञ' का ज्ञान हमें दिया है:-

सं ते प्राणो वातेन गच्छताꣳ समङ्गानि यजत्रैः सं यज्ञपतिराशिषा॥[3]

अर्थात् यज्ञ से प्राणवायु की उत्तम शुद्धि अर्थात् पर्यावरण की शुद्धि होती है। अतः सम्पूर्ण विश्व के नागरिकों को इसकी महत्ता को समझना होगा, तभी हम अपनी आने वाली पीढ़ी को एक स्वच्छ वातावरण प्रदान कर सकेंगे।

इसके अतिरिक्त यज्ञ से होने वाले परिणाम इस प्रकार हैं-

1. प्रतिदिन यज्ञ के करने से घर का वातावरण शुद्ध, पवित्र होकर पुष्टिदायक तत्त्वों से परिपूरित होता है।

2. वातावरण में मानसिक तनाव से मुक्ति मिलती है तथा मन को शान्ति एवं प्रसन्नता का अनुभव होता है।

3. रोग प्रतिकारात्मक शक्ति बढ़ती है एवं स्वास्थ्य लाभ होता है।

4. व्यसनमुक्ति के लिये भी यज्ञ अत्यन्त प्रभावी एवं उपयुक्त पाया गया है।

5. आयुर्वेद के अनुसार यज्ञ की भस्म में औषधीय गुण होते हैं।

6. यज्ञ की भस्म, उत्तम उर्वरक के रूप में भी उपयोगी सिद्ध हुई है।

राकेश भुटियानी एवं डॉ. देवराज खन्ना
जन्तु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग,
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

---

3. यजु0 6.10